22 P
203
H 22
MICROFILM

203

आज़ादी के तराने और कौमी झण्डा

(NATIONAL SONG & FLAG)

दरो दीवार पै हसरत से नज़र करते हैं।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं॥

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
IENT

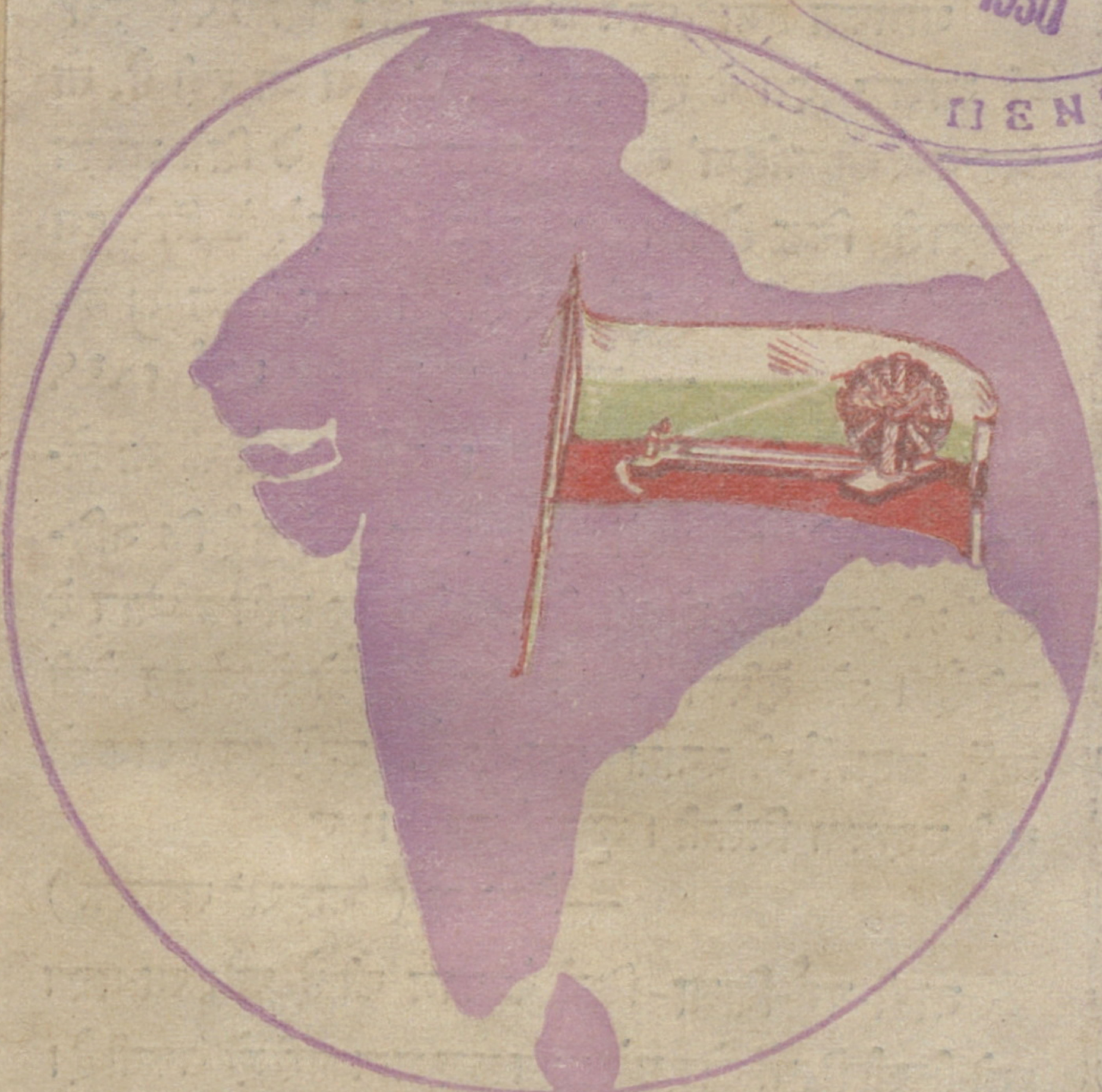

यह भारत की जय ध्वजा गगनभेदि भहराय।
करै अभय हिन्दीन को, बैरिन हृदय कँपाय॥

प्रकाशकः—

काशी-पुस्तक-भण्डार, बनारस सिटी।

देखिये ! अवश्य पढ़िये ! आपके हित की बात !

सम्मतियां—

ब्रह्मचर्य्य की महिमा—पर 'भारत' नामक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र की राय—

आजकल हमारे पतन के समय, जब 'शक्ति पैदा करो' की आवाज़ देश के हर एक कोने कोने से आ रही है, तो 'ब्रह्मचर्य्य की महिमा' नामक पुस्तक जनता के लिये अवश्य गुणकारी सिद्ध होगी। इस पुस्तक के पढ़ने के लिये हम 'भारत' के पाठकों से अनुरोध करते हैं। मूल्य केवल १) रु०

—'भारत' (प्रयाग) २४ मार्च १९२९

नारी-धर्म-शिक्षा—की लेखिका पुराने आदर्शों की माननेवाली एक महिला हैं। हमें यह देख कर खुशी हुई कि महिलायें भी अपने बहिनों की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दे रही हैं। जो देवियाँ अपनी कन्याओं को फेशनेबुल लेडी नहीं, सहधर्मिणी बनाना चाहती हैं, उन्हें इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिलेगी। मूल्य केवल १।) रु०

—प्रेमचन्द ('माधुरी' लखनऊ)

नारी-धर्म-शिक्षा—स्त्रियों के काम की है और साधारण पढ़ी-लिखी स्त्रियों को इससे बहुत कुछ जानकारी हो सकती है।

—'प्रताप' (कानपुर) २१ जुलाई १९२९

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—एस० बी० सिंह एण्ड को०

(मिर्ज़ापुर यू० पी०)

केवल आवरण पृष्ठ श्री ल. ना. प्रेस काशी में मुद्रित.

❀ वंदे मातरम् ❀

आज़ादी के तराने और कौमी-झंडा

विद्यार्थियों को संदेश

संपादक

श्रीसूर्यबलीसिंह

प्रकाशक

काशी - पुस्तक - भण्डार,

बनारस सिटी ।

सर्वाधिकार सुरक्षित

जुलाई १९३० ई०

पहिली बार २०००] [मूल्य =) मात्र

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 203
Data 3.12.71
GOVT. OF INDIA

चरखे से राजा बनायेंगे

चरखे से भारत को राजा बनायेंगे।
राजा बनाकर महाराजा बनायेंगे॥ चरखे०॥
चरखा चतुर्भुज के चरण कमल से।
घर-घर में सूते की गंगा बहायेंगे॥ चरखे०॥
लन्दन की लोहे की जिन्दा कलों को।
जादू की लकड़ी से मुर्दा बनायेंगे॥ चरखे०॥
गर्वीले गोरों के सारे गरब को।
गांधी की आँधी से छिन में उड़ायेंगे॥ चरखे०॥
महलों, झोपड़ियों के नारी-नरों को।
चरखा का करघा बजाकर जगायेंगे॥ चरखे०॥

विद्यार्थियों की गर्जना

चलो भाइयो, उठो आज माता ने तुम्हें बुलाया है।
महामान्य गांधी के द्वारा यह सन्देश पठाया है॥
उठाकर रख दो पुस्तक वीर, गुलामी की तोड़ो जञ्जीर।
न हो जब तक भारत स्वाधीन, न लो विश्राम न हो श्रमहीन॥
हो जाओ बलिदान देश पर यही मंत्र बतलाया है।
बड़ों ने बोरी लाज जहाज, तुम्हीं पर निर्भर है यह काज॥
पिन्हा दो भारत को सिरताज, चकित हो देखे सकल समाज।
आज काज भारत स्वराज का हाथ तुम्हारे आया है॥

स्कूल और कालेज छोड़ संग्राम में भाग लो

विद्यार्थी-सभा में राष्ट्रपति की गर्जना

अभी उस दिन बम्बई में विद्यार्थियों की एक बड़ी सभा हुई। लगभग ५ हजार कालेज और स्कूलों के विद्यार्थी उपस्थित थे। वर्तमान राष्ट्रपति सरदार वल्लभभाई पटेल ने विद्यार्थियों की इस सभा में भाषण करते हुए विद्यार्थियों को स्कूल और कालेज छोड़कर स्वाधीनता के संग्राम में भिड़ जाने के लिये ललकारा और कहा—"क्या तुम ऐसे समय में, जब समस्त देश स्वाधीनता के संग्राम में जुटा हुआ है, चुपचाप खड़े तमाशा देखना चाहते हो ? क्या तुम्हें मालूम है कि वे देश के युवक ही थे, जिन्होंने कांग्रेस को यह विश्वास दिलाया था, कि वे पूर्ण स्वतंत्रता चाहते हैं ? क्या तुम्हें यह मालूम है कि तुम्हारी इस स्वतंत्रता की भावना के उद्वेग की पूर्त्ति में ही महात्माजी और पं० मोतीलाल नेहरू को जेल जाना पड़ा है ? क्या तुम्हें यह विदित है कि तुम्हारे आदर्श युवक सिरमौर पं० जवाहरलाल नेहरू को जेल भोगनी पड़ रही है ? क्या तुम्हें यह विदित है कि स्त्रियाँ अपने मस्तक पुलिस की लाठियों से तोड़वा रही हैं, और सैकड़ों आपकी बहिनें मातृ-भूमि की बलिवेदी पर अपना मस्तक समर्पित करने के लिये तैयार हैं ? क्या ऐसे समय पर तुम्हारी आत्मा कहती है कि तुम कालेजों में बैठे रहो ? जब देश स्वाधीनता का अन्तिम संग्राम लड़ रहा है, तब क्या तुम्हें फ्रांस की क्रांति पर प्रबन्ध लिखना या इंगलैंड का इतिहास पढ़ते रहना शोभा देता है ? मेरी समझ में तो या तो तुम्हें अपने हृदय की बात कहने का साहस नहीं है, या तो फिर तुम्हारा हृदय ही पत्थर का है। मैं इस समय तुमसे बहस नहीं करना चाहता और न उन लोगों की दलील ही सुनना चाहता हूँ, जो कालेजों के न छोड़ने के पक्ष में हैं। क्या तुमने सुना है कि

स्थानीय कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीपैरिन कैप्टन गिरफ्तार हो गयी हैं ? उन्होंने तुम्हें जो सन्देश दिया है वह यह है कि राष्ट्रीय झण्डे को ऊँचा रखो ? क्या कालेजों में बैठकर किताबों में गड़े हुए, तुम इसकी पूर्त्ति कर सकते हो ? केवल हड़ताल मनाकर स्वतंत्रता की चाह के प्रदर्शन से कुछ न होगा। देश आज अपना भावी इतिहास रच रहा है, क्या तुम उसमें अपना एक पृष्ठ या एक पंक्ति भी नहीं जोड़ना चाहते ? तुम्हारे नेता गिरफ्तार हो चुके हैं। वीर नरीमन और मेहरअली कब के जेल में बन्द कर दिये गये थे ! आर्डिनेंस पर आर्डिनेंस आ रहे हैं, बुरे से बुरा समय सामने है। कितने ही आजाद मैदान, कितने ही धरासना और कितने ही बड़ाला अभी देखने होंगे। तुम कितने दिनों तक इसी प्रकार कालेजों की माया में फँसे रहोगे ? क्या कालेज की शिक्षा यही सिखलाती है कि दूसरे संग्राम करें और तुम उससे लाभ उठाओ, यदि ऐसा हो, तो ऐसी शिक्षा पाने के बजाय भूखों मर जाना अच्छा है। यदि तुम कमज़ोर हो, यदि तुम कायर हो, तो प्रस्तावा और बड़ी-बड़ी बातों-द्वारा इसके छिपाने का प्रयत्न न करो और ईश्वर के लिए दूसरों को संग्राम में आने से न रोको। क्या तुम नहीं जानते हो कि यूरोपीय महायुद्ध में केंब्रिज और आक्सफोर्ड के युवक कालेजों को छोड़कर युद्ध में सम्मिलित हुए थे ? जब स्त्रियाँ तक रण-संग्राम में आ गयीं हैं, तब भी क्या तुम्हें कालेजों में पैर रखते हुए लज्जा नहीं आती ? भावी इतिहास रचयिता तुम्हें किस नाम से पुकारेगा ? क्या तुम देश-द्रोही कहलाना पसन्द करोगे ? यदि तुम अन्तःकरण से विचार करोगे, तो निस्सन्देह इस नतीजे पर पहुँचोगे, कि तुम्हें डिगरियों का मोह छोड़कर राष्ट्रीय संग्राम में जुट जाना चाहिये।

'स्वाधीन भारत' ता० ६—७—३० ई०

आज़ादी के तराने और कौमी-झंडा

———:०:———

झण्डे की महिमा

झण्डा राष्ट्र का प्राण है। झण्डा राष्ट्र-शक्ति का द्योतक है। इसके नीचे सभी जाति, धर्म, सम्प्रदाय और विचार के व्यक्ति खड़े होकर राष्ट्रीय एकता का अनुभव कर सकते हैं।

झण्डोत्सव का श्रीगणेश

राष्ट्रीय महासभा के १९२८ वाले अधिवेशन के अवसर पर हिन्दुस्तानी सेवादल ने निश्चय किया था कि प्रतिमास के अन्तिम रविवार को झण्डा फहराया जावे, जिससे राष्ट्रीय भाव सतत जागृत हो।

प्रत्येक युवक का कर्तव्य

प्रतिमास के अन्तिम रविवार को देश के सभी युवक और विशेषत: हि० से० दल के सदस्य और सहायक सम्मिलित होकर राष्ट्रीय भाव की पुष्टि करें तथा हि० से० दल के काम को आगे बढ़ावें।

तीनरंगा झण्डा

राष्ट्रीय झण्डे में तीन रंग हैं—

ऊपर सफेद, बीच में हरा और नीचे लाल। लाल से हिन्दू,

हरे से मुसलमान और सफेद से भारत की अन्य सभी जातियों की ओर संकेत है।

लाल क्रान्ति का, हरा हरे-भरे का और सफेद विश्व-शान्ति का भी द्योतक समझा जाता है; अर्थात्—अहिंसात्मक वैध क्रान्ति मचाकर देश को स्वतंत्र कर हरा-भरा करना है। स्मरण रहे भारत की स्वाधीनता विश्व-शान्ति के पथ दर्शाने का भी साधन है।

झण्डा फहराने की सामग्री

(१) शुद्ध खद्दर का आयताकार तीनरंगा झण्डा। झण्डे में रस्सी बाँधने के लिए दो काज ऊपर नीचे रहने चाहिये।

(२) एक ऊँचा और सीधा बाँस या इसी प्रकार का कोई और खम्भा।

(३) खम्भे की लम्बाई की दुगुनी पतली चिकनी मजबूत रस्सी।

(४) एक घिरनी या लोहे की कड़ी।

झण्डा फहराने की विधि—

खम्भा गाड़ने के पहिले कड़ी को खम्भे के ऊपरी सिरे के पास बाँध देना और उसमें रस्सी को लटका देना। रस्सी के दोनों सिरे नीचे की ओर होने चाहिये। झण्डे के तीनों रंगों को अलग-अलग दोहरा कर आपस में मिला देना और इस प्रकार चुन देना कि सफेद रंग ऊपर की ओर रहे। झण्डे को मोड़ और

चुन लेने के बाद रस्सी के एक छोर को सफेद रंगवाले (ऊपर-वाले) काज में बाँध देना चाहिए। और दूसरा छोर लाल रंग के (नीचेवाले) काज में बाँध देना चाहिए। लाल रंग के काज से बँधे छोर की ओर से झण्डे को सरकफाँस बाँध देना और ऊपर खींच कर झण्डा ऊपर ऊँचा उठा लेना।

झण्डा अभिवादनादि और प्रार्थना में सम्मिलित होनेवाले व्यक्तियों को चन्द्राकार खड़े हो जाना चाहिए। झण्डा फहराने-वाले और प्रार्थना करानेवाले सज्जन सामने खड़े हो जावें। प्रार्थना करानेवाले व्यक्ति "प्रार्थना के लिए सावधान" बोलें और बाकी लोग दोनों हाथ जोड़कर सावधान की अवस्था में खड़े हो जावें और नीचे लिखा गीत गावें—

झण्डा वन्दना

यह राष्ट्र-ध्वजा धन मेरा जीवन बलिदान करेंगे।
झंडा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़कर प्यारा,
तन मन धन इस पै वारा, जीवन कुरबान करेंगे। यह राष्ट्र०
शूली पर उछल चढ़ेंगे, बन्धन से नहीं डरेंगे,
सब कुछ सानन्द सहेंगे, पर झंडा नहीं तजेंगे। यह राष्ट्र०
आओ झण्डा फहरावें, शुचि राष्ट्र-भाव दर्शावें,
सत्याग्रह समर दिखावें, पर हिंसा नहीं करेंगे॥ यह राष्ट्र०

झंडा फहराना

झंडा फहराने वाला व्यक्ति खंभे के पास जाकर उस रस्सी

को पकड़ कर खींचे, जिससे पहले सरकफाँस बाँधा गया हो और साथ ही सभी व्यक्ति एक साथ हृदय पर दाहिना हाथ रखें और सर को झुकावें। इसके बाद रस्सी को खंभे में खूब कस कर बाँध देना चाहिए फिर सावधान की हालत में होकर नीचे लिखा गीत गावें—

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेमसुधा सरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा। झं० ॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में,
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥ झं०॥
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ॥ झं०॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ॥झं०॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भलेही जाये,
विश्व मुग्ध करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥झं०॥

दण्डाभिवादन और जय

उपरोक्त गीत समाप्त होने पर प्रार्थना कराने वाला व्यक्ति बोलेगा दण्डाभिवादन एक, दो। दण्डाभिवादन एक कहने पर सब लोग बायें पैर के घुटने के बल खड़े हों, दाहिने हाथ को हृदय पर रख, सर झुका लेवें और दो कहने पर पहले के जैसा सीधे

खड़े हो जायँ । इसके बाद तीन बार 'भारतमाता की जय' और तीन बार 'वन्देमातरम्' जोर-जोर से बोलें । भारत माता की जय बोलने में अगुआ एक बार अकेले "भारत माता की" और बाकी सब एक साथ "जय" बोलें तो बड़ा सुन्दर होता है ।

प्रार्थना समाप्त

इसके बाद प्रार्थना समाप्त हो जाती है । प्रार्थना समाप्त करते समय भी अगुआ बोलेगा "प्रार्थना समाप्त" । इस पर सभी प्रार्थी अपनी दाहिनी ओर घूम जायेंगे । दाहिनी ओर घूमकर हृदय पर हाथ रखकर सर झुकायें और चल दें ।

झंडा उतारना

सन्ध्या समय सूर्य्यास्त के कुछ पहले सब लोग इकट्ठा होकर झण्डा फहराने के समय की नाईं ही अर्द्ध-चन्द्रावृत्त में खड़े हो, ठीक उसी प्रकार सब काम कर लें और नीचे लिखे गीत गावें—

राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति
राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।
भारत जननी के गौरव की,
अविचल शाखा नमो नमो ॥

कर में लेकर इसे सूरमा तीस कोटि भारत सन्तान,
हँसते-हँसते मातृ-भूमि के चरणों पर होंगे बलिदान,
हो घोषित निर्भीक विश्व में तरल तिरंगा नवल निशान,

वीर हृदय खिल उठे मार लें भारतीय रण में मैदान।
हो नस-नस में व्याप्त चरित सूरमा शिवा का नमो नमो ॥राष्ट्र०॥
नवयुवको! स्वातंत्र्य समर में नव जीवन संचार करो,
शस्त्र अहिंसा से दल कर दासता-दुर्ग को क्षार करो,
शान्ति-क्रान्ति युग में हे वीरो! जीवन-सुमन निसार करो,
ऊँचे स्वर से एक साथ जननी का जय-जय-कार करो,
शक्ति देखकर शत्रु-शिविर में मचे सनाका नमो नमो ॥राष्ट्र०॥
उच्च हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे,
विश्व-विजयिनी राष्ट्र-पताका का गौरव फहरायेंगे,
सब से ऊँची रहे न इसको नीचे कभी झुकायेंगे,
समराङ्गण में लाल लाड़िले लाखों बलि बलि जायेंगे।
गूँजे स्वर संसार-सिन्धु में स्वतंत्रता का नमो नमो ॥राष्ट्र०॥

झण्डा उतारना

रस्सी नीचे की ओर खींचते समय भी उसी प्रकार नमस्ते करना चाहिये। प्रार्थना समाप्ति की विधि भी सब वही रहेगी, केवल दण्डाभिवादन की आवश्यता नहीं; क्योंकि उस समय झण्डा उतर जाता है, जय आदि बोलना अत्यावश्यक है। हि० से० दल के स्वयंसेवक या अन्य लोग भी झण्डे को उतारकर और उसे सुन्दर रीति से मोड़कर अपने नायक या अन्य बड़े व्यक्ति को ले जाकर नियमानुसार अभिवादन कर दे देगा, एवं झण्डा उन्हें देकर वापस आते समय भी अभिवादन करेगा। यह कार्य्य प्रार्थना समाप्त होने के पहले ही हो जाना चाहिय।

अन्य गीत

नीचे भी कुछ और इधर-उधर के अन्य गीत दिये जाते हैं जिनमें राष्ट्रीय भाव भरे हैं। ये गीत राष्ट्रीय उत्सव या अन्य राष्ट्रीय कार्य्यों के समय गाये जा सकते हैं, जुलूस आदि के लिये भी बड़े सुन्दर हैं। ऐसे गीतों का प्रचार राष्ट्रोन्नति के लिए नितान्त आवश्यक है।

है आज जमाना हे वीरो! आजादी के दीवानों का,
जीवन धन सब कुर्बान करो, है आज समय बलिदानों का।
अपने स्वराज लेना होगा इङ्गलैण्ड आप झुक जावेगा,
अपने पैरों पर आप डटो तुम तजो आश परवानों का।
उच्च हिमालय से सागर औ ब्रह्म पुत्र से गुर्जर देश,
अटक कटक लों आदर हो अब गान्धी के फरमानों का।
हो तौक गुलामी टूक टूक माता के बन्धन कट जावें,
बलिवेदी पर बलि होने को अब चले झुण्ड मरदानों का।
चल हिन्द देश में एक सिरे से आग लगा दे हे भाई,
हो देश बीच अब उथल पुथल औ खौले खून जवानों का।
फाँसी से अब तुम नहीं डरो परवाह नहीं गोली बरसे,
हो खुली संगीनों पै छाती औ कौल रहे मरदानों का।

नौजवानो

भारत के नौजवानो, मैदाने जंग आओ।
बन देश प्रेमी अपना, जीवन सफल बनाओ॥

वे वीर त्यागी अपना, कर्तव्य कर रहे हैं।
है राह उनकी सीधी, उस पर क़दम बढ़ाओ॥
है कौन शक्ति ऐसी, जो तुमको रोक लेगी।
गर एक साथ होकर, बल अपना तुम दिखाओ॥
भय त्याग दो अभय बन, स्वातन्त्र्य जंग छेड़ो।
भू माँ को अपनी वीरो, बंधन से तुम छुड़ाओ॥

क्या हमारे दिल में है—

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना अब ज़ोर कितना बाजुये क़ातिल में है॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूर ये मंजिल में है॥
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत का चरचा ग़ैर की महफ़िल में है॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है॥

वतन के वास्ते

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते॥

तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दियो !
ग़ैर के मोहताज हो अपने कफ़न के वास्ते ॥
देखते हैं आज जिसको शाद है, आज़ाद है।
क्या तुम्हीं पैदा हुए रंजो मेहन के वास्ते ॥
दर्द से अब बिलबिलाने का ज़माना हो चुका ।
फ़िक्र करनी चाहिए मर्ज़े कुहन के वास्ते ॥
हिन्दुओं को चाहिए अब क़स्द काबे का करें।
और फिर मुस्लिम बढ़ें गंगो-जमन के वास्ते ॥

हमारा भारतवर्ष

भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है,
दुनियाँ भर में प्रकृतिदेवि की आँखों का यह तारा है।
भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥ १ ॥
इसका मुकुट किरीट हिमाचल, है यज्ञोपवीत गङ्गाजल,
फलकर इसने विविध फूलफल, सुरभि-सुयश विस्तारा है ।
भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥ २ ॥
होने को बलिदान इसी पर, तीस कोटि सिर रहते तत्पर,
कहते हैं जो गर्ज-गर्जकर, भारतवर्ष हमारा है।
भारतवर्ष हमारा प्यारा भारतवर्ष हमारा है ॥ ३ ॥

छोड़ दो बहाना

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥

मत बुज़दिली को हर्गिज़ तुम पास दो फटकने।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना॥
स्वातंत्र-देवि के अब जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना॥
परदेसियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का आबदाना॥
दृढ़ सत्य पर रहो अरु धारण करो अहिंसा।
आ करके जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो अब बस छोड़ दो बहाना॥
जब देश भर के नेता सब जेल में पड़े हैं।
तो फिर तुम्हें भी यारो लाजिम है जेल जाना॥
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ।
है स्वर्ग से भी बढ़कर इस वक्त जेलखाना॥
'सरयू' समय यही है कुछ कर के देशसेवा।
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना॥

महात्माजी को बन्दी बनाना

गांधी का जेल जाना हमको बता रहा है।
सचाई औ अहिंसा का रोब छा रहा है॥
करके दिखाया जो कुछ मुँह से कहा है उसने।
कर्तब का इसके भारत डंका बजा रहा है॥

निःस्वार्थ कार्य करना दुःखों पै दुःख सहना।
पीछे क़दम न रखना गांधी सिखा रहा है॥
जैकार उठ रहे हैं संसार यश है गाता।
भारत सपूत तेरा मैराज पा रहा है॥
अब यज्ञ हो चुका है बलिदान हो चुका है।
होगा स्वराज प्यारो! वह वक्त आ रहा है॥

हिन्द मेरा आज़ाद रहे-माता के सरपर ताज रहे

मेरी जाँ न रहे मेरा सर न रहे, सामा न रहे न ये साज रहे॥
फ़क़त हिन्द मेरा आज़ाद रहे, माता के सर पर ताज रहे॥
पेशानी में सोहे तिलक जिसके, औ गोद में गान्धी विराज रहे॥
न ये दाग़ बदन में सुफेद रहे, न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे॥
मेरे हिन्दू मुसल्माँ एक रहें, भाई भाई-सा रस्मोरिवाज रहे॥
मेरे वेद पुरान कुरान रहें, मेरी पूजा रहे औ नमाज़ रहे॥
मेरी टूटी मड़ैया में राज रहे, कोई गैर न दस्तन्दाज़ रहे॥
मेरी बीन के तार मिले हों सभी, एक भीनी मधुर आवाज़ रहे॥
ये किसान मेरे खुशहाल रहें, पूरी हो फ़सल सुखसाज रहें॥
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें, मेरी मा बहिनों में लाज रहे॥
मेरी गायें रहें मेरे बैल रहें, घर घर में भरा नित नाज रहे॥
घी दूध की नदियाँ बहती रहें, हरसू आनन्द स्वराज रहे॥
"माधो" की है चाह खुदा की क़सम, मेरे बाद वफ़ात ये वाज़ रहे॥
गाढ़े का कफ़न हो मुझ पै पड़ा, बन्देमात्रम् अलफ़ाज रहे॥

कृष्ण मंदिर (जेल)

न समझो हथकड़ी बेड़ी यह जेवर ही निराला है।
ईश भक्तों ने कर-पग में खुशी से इसको डाला है॥
यह जेवर बेश· कीमत मोल इसका हो नहीं सकता।
जो धारे इसको निज तन में वह बर तकदीर वाला है॥
बड़े भागों से इस थल पै हुआ हम लोग का आना।
यह नटवर का जनम घर है इसी का बोल बाला है॥

बालक की विनती

माता मोहे खद्दर के कपड़े सिला दे।
टोपी दिला दे, कुरता सिला दे, मोटी सी धोती मँगा दे॥
खद्दर की चादर मखमल से बढ़ कर, खद्दर के जूते सिला दे।
पहने इसे कर प्रणाम, नगर देख घूमधाम।
तब हो प्यार धाम, धाम, धाम, धाम॥ माता०॥

छोटा सा चरखा

मेरा छोटा सा चरखा जान मारे रे।
जान मारे रे मेरा प्राण मारे रे॥ मेरा०॥
छोटी सी घिरनी, छोटी सी भरनी।
घिरनी घनाघन घुमाम मारे रे॥ मेरा०॥
कैसा है सुन्दर, घन का समुन्दर।
गीता का मन्त्र सुनाय मारे रे॥ मेरा०॥

कहाँ चले

एक दलः—कहाँ चले ओ सुभट बालगण वीर हृदय गरबीले।
झण्डे लिये हाथ में अपने श्वेत लाल औ नीले॥
दूसरा दलः—हम जाते हैं युद्धस्थल को देश काज हित भाई।
चल सकते हो तुम सब भी यदि बनना चाहो सिपाही॥

अनोखी पुस्तकें

शीघ्र ही खरीद कर लाभ उठाइए !

देश की बात—यह भारत में अंग्रेजी राज्य का वृहत् इतिहास है। अंग्रेजी राज्य से पहले भारत की क्या अवस्था थी, अंग्रेजों के संसर्ग से किस प्रकार भारतियों का चरित्र-बल नष्ट हुआ, किन-किन घृणित और निंद्य उपायों-द्वारा बृटिश-राज्य स्थापित हुआ, किस बेरहमी से यहाँ के उद्योग-धन्धों का सर्वनाश किया गया, आदि बातें बड़ी खोज के साथ लिखी गई हैं। मूल्य ३॥)

प्रणय—एक सामाजिक क्रान्तिकारी मौलिक उपन्यास है। पढ़ते ही बनता है, प्रत्येक नर-नारी के लिये इस २० वीं सदी में गीता के समान है। मूल्य २)

योगी अरविन्द घोष की दो रचनायें—

अरविन्द मन्दिर में—मूल्य ||)

धर्म और जातीयता—१)

बन-देवी—एक अनूठा राष्ट्रीय उपन्यास है। पाँच चित्रों के सहित मूल्य ||)

कर्त्तव्याघात—एक प्रसिद्ध उपन्यास जिसमें कर्त्तव्य-विवेचन बहुत उत्तमता से किया गया है। आप इसे पढ़-कर आदर्शता के ग्राहक हो जायेंगे। मूल्य २।)

मैनेजर—एस० बी० सिंह एण्ड को०

(मिर्ज़ापुर यू० पी०)

मुद्रक—श्रीप्रवासीलाल वर्मा, सरस्वती प्रेस, काशी.

पढ़ने योग्य पुस्तकें

नारी-धर्म-शिक्षा—लेखिका, मनव्रता देवी। अपनी सहधर्मिणी को शिक्षिता बनाकर अपने घर को स्वर्ग-रूप देखना चाहते हैं, तो "नारी-धर्म-शिक्षा" की एक प्रति अवश्य मँगा लीजिए। स्त्रियों के लिए जिन बातों के जानने की नितान्त आवश्यकता है, वे सब इसमें सरल भाषा में मिलेंगी। यह पुस्तक अपने घर की देवियों को जरूर पढ़ाइए। परिणाम देखकर आप चकित हो जायँगे। मूल्य १।)

ब्रह्मचर्यकी महिमा—अपने भोले-भाले; बच्चों को तथा कुसंगमें फँसकर अपना सर्वनाश कर लेने वाले नवयुवकों को आप सन्तेज, बली और कान्तिवान देखना चाहते हैं, तो एक बार "ब्रह्मचर्य की महिमा" नाम की पुस्तक अवश्य उनके हाथ में दीजिए। उनके सब ऐब इस पुस्तक के पढ़ते ही लोप हो जायँगे। वे ऐसे सुधर जायँगे कि आप आश्चर्य करने लगेंगे। मूल्य १)

अरविन्द मन्दिर में—इसमें हर तरहके साधकोंके लिये साधना की विधि बतलायी गयी है, और भविष्यमें क्या होने वाला है, यह योगिराज ने आकाशवाणी-द्वारा ईश्वरीय सन्देश मालूम करके देशको बतलाया है, जो कि अक्षरशः सत्य उतरता जा रहा है। मूल्य ॥।)

मैनेजर—एस० बी० सिंह एण्ड को०

मिर्जापुर (यू० पी०)